बहन लोमड़ी और बेलना

एक दिन जब बहन लोमड़ी जंगल में से गुजर रही थी तो उसे वहां एक बेलना मिला। उस ने उसे उठा लिया और अपने रास्ते पे चल पड़ी।

जल्दी ही वह एक गांव में आई और उसने एक झोंपड़ी का दरबाजा खटखटाया।

"ठक ठक ठक"।
"तुम कौन हो?"
मैं बहन लोमड़ी हूँ। कृप्या मुझे रात को ठहरने केलिए अंदर आने की आज्ञा दे दो।
"कम जगह होने के कारण हम पहले ही बहुत तंग है आप के आने से हम और तंग हो जाऐगे।"
"मै ज्यादा जगह नहीं रोकूगी। मैं बैंच पे लेट जाऊगी ओर अपनी पूंछ को लपेट कर अपने नीचे रख लूंगी। बेलने को चुल्ले के पास रख दूँगी।"
इस लिए उन्होनें उसे अंदर आने की अनुमति दे दी। वो बैंच पर लेट गई। उसने अपनी पूंछ को लपेट कर अपने नीचे रख लिया और बेलने को चुल्ले के पास रख दिया।
बहन लोमड़ी सुबह होने से पहले ही जाग गई। उसने बेलने को जला दिया और जोर जोर से चिलाने लगी और कहने लगी, "आपने मेरे बेलने को क्या कर दिया? अब इस के बदले में मुझे मुर्गी दो"। अब किसान कुछ नहीं कर सकता था इस लिए बेलने बदले उसको मुर्गी दे दी।

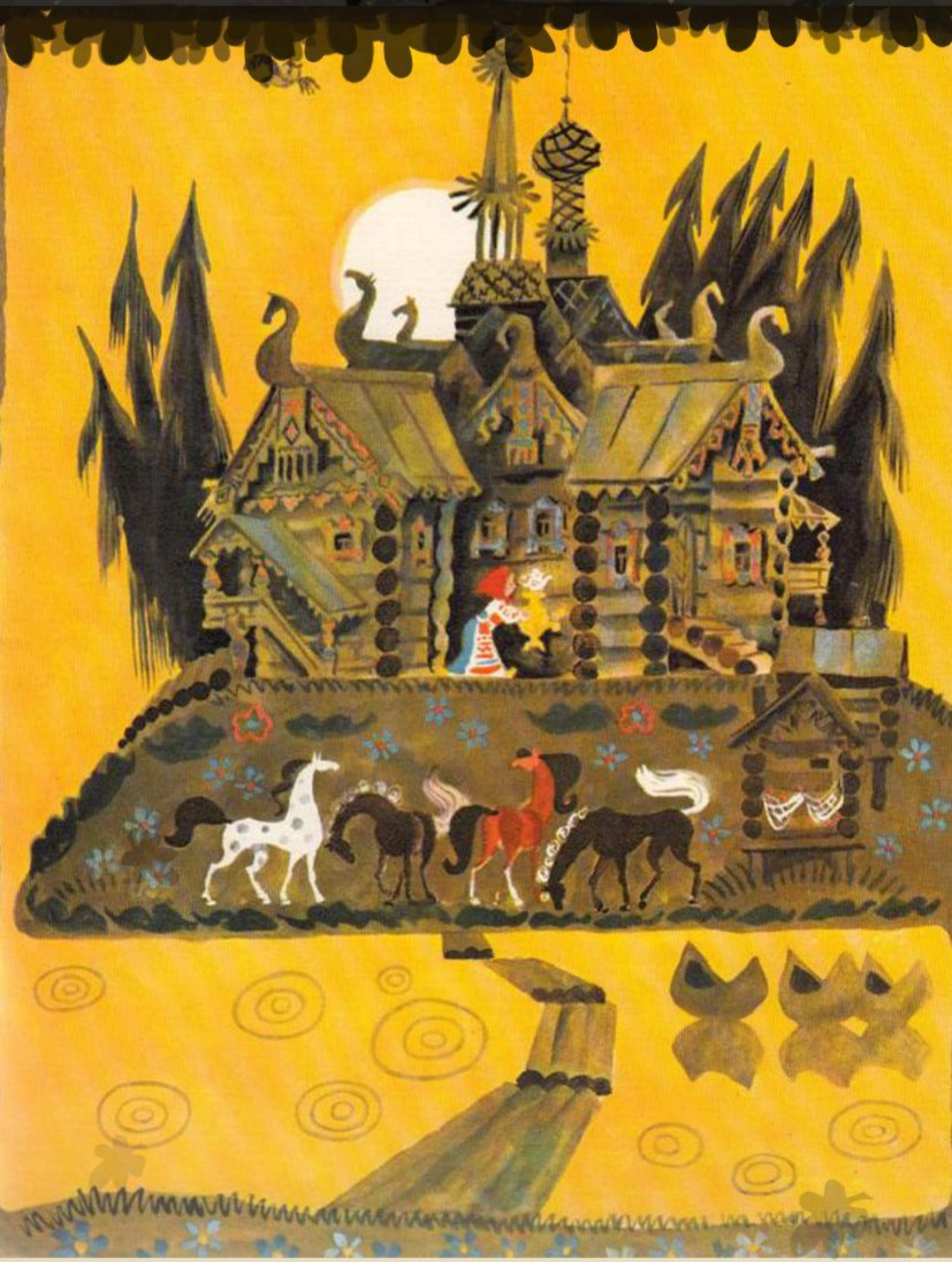

बहन लोमड़ी मुर्गी लेकर अपने रास्ते पे चल पड़ी और गाना गाती गई।
"एक लोमड़ी एक दिन जा रही थी देखो।
रास्ते में उसे एक बेलना मिला,
बेलने बदले मुर्गी ली।"

जल्दी ही वो एक और गांव में पहुँच गई और एक झोपड़ी का दरबाजा खटखटाया।
"ठक ठक ठक।"
"तुम कौन हो?"
"मैं बहन लोमड़ी हूँ। कृप्या मुझे रात ठहरने के लिए अन्दर आने की आज्ञा दे दो।"
"मै ज्यादा जगह नहीं रोकूगी। मैं बैंच पे लेट जाऊगी ओर अपनी पूंछ को लपेट कर अपने नीचे रख लूंगी। मुर्गी को चुल्ले के पास रख दूँगी।"
इस लिए उन्होनें उसे अंदर आने की अनुमति दे दी। वो बैंच पर लेट गई। उसने अपनी पूंछ को लपेट कर अपने नीचे रख लिया और मुर्गी को चुल्ले के पास रख दिया।
बहन लोमड़ी सुबह होने से पहले ही जाग गई। उसने मुर्गी को उठाया और खा गई कुछ समय पश्चात् वो शोर मचाने लगी, "आपने मेरी मुर्गी को क्या कर दिया? इस के बदले में अब मुझे हंस दो।"

बहन लोमड़ी मुर्गी लेकर अपने रास्ते पे चल पड़ी और गाना गाती गई।
"एक लोमड़ी एक दिन जा रही थी देखो।
रास्ते में उसे एक बेलना मिला,
बेलने बदले मुर्गी ली।"
जल्दी ही वो एक और गांव में पहुँच गई और एक झोपड़ी का दरबाजा खटखटाया।
"ठक ठक ठक।"
"तुम कौन हो?"

"मैं बहन लोमड़ी हूँ। कृप्या मुझे रात ठहरने के लिए अन्दर आने की आज्ञा दे दो।"
"मै ज्यादा जगह नहीं रोकूगी। मैं बैंच पे लेट जाऊगी ओर अपनी पूंछ को लपेट कर अपने नीचे रख लूंगी। मुर्गी को चुल्ले के पास रख दूँगी।" इस लिए उन्होनें उसे अंदर आने की अनुमति दे दी। वो बैंच पर लेट गई। उसने अपनी पूंछ को लपेट कर अपने नीचे रख लिया और मुर्गी को चुल्ले के पास रख दिया।

बहन लोमड़ी सुबह होने से पहले ही जाग गई। उसने मुर्गी को उठाया और खा गई कुछ समय पश्चात् वो शोर मचाने लगी, "आपने मेरी मुर्गी को क्या कर दिया? इस के बदले में अब मुझे हंस दो।"

बहन लोमड़ी हंस लेकर गाती हुई अपने रास्ते पे चल पड़ी। वो गा रही थी।

“एक लोमड़ी एक दिन जा रही थी देखो।
रास्ते में उसे एक बेलना मिला,
बेलने बदले उसने मुर्गी ली,
मुर्गी बदले हंस ।”

रात समय वह तीसरे गांव में पहुँच गई और एक झोपड़ी का दरबाजा खटखटाया।

"ठक ठक ठक।"
"तुम कौन हो?"
"मैं बहन लोमड़ी हूँ। कृप्या मुझे रात ठहरने के लिए अन्दर आने की आज्ञा दे दो।" "जगह की कमी के कारण हम पहले ही बहुत तंग है आप के आने के कारण हम और तंग हो जाएंगे"।"मै ज्यादा जगह नहीं रोकूगी। मैं बैंच पे लेट जाऊगी ओर अपनी पूंछ को लपेट कर अपने नीचे रख लूंगी। हंस को चुल्ले के पास रख दूँगी।"

इस लिए उन्होनें उसे अंदर आने की अनुमति दे दी। वो बैंच पर लेट गई। उसने अपनी पूंछ को लपेट कर अपने नीचे रख लिया और हंस को चुल्ले के पास रख दिया।
बहन लोमड़ी सुबह होने से पहले ही जाग गई। उसने हंस को उठाया और खा गई कुछ समय पश्चात् वो शोर मचाने लगी, "आपने मेरे हंस को क्या कर दिया? इस के बदले में अब मुझे अपनी छोटी लड़की दो।"

लेकिन किसान अपनी छोटी लड़की देना नहीं चाहता थां इस लिए उसने एक बड़े थैले में एक बड़ा कुत्ता डालकर उस को पकडा दिया और बोला, "बहन लोमड़ी ले पकड़, तुम्हारे लिए मेरी छोटी लड़की।"

बहन लोमड़ी ने थैला लिया और अपने रास्ते पे चल पड़ी। कुछ समय उपरांत उसने कहा, "ऐ छोटी लड़की मेरे लिए कोई गीत गा।"

यह सुनते ही कुत्ता ऊंची ऊंची भौंकने लगा। बहन लोमड़ी इतना डर गई कि उसने थैला वहीं फेंक दिया ओर तेजी से भागने लगी। कुत्ता थैले से बाहर आ गया और उसके पीछे दौड़ने लगा।

वो कुत्ते के आगे आगे पूरे बल से दौड़ती रही और अंत में उसने एक वृक्ष के तने के नीचे बने धुरने में छलांग लगा दी। वहां कुछ समय आराम करने के उपरांत वो कहने लगी।

"अच्छा कानों, आप उस समय क्या कर रहे थे?
"हम उस समय पूरी कोशिश से सुनने में लगे हुए थे।"
"और टांगे आप के बारे में क्या है? आप उस समय क्या कर रही थी?"
"हम उस समय दौड़ने में व्यस्त थी।"
"और आखों आप बताएं"
"हम उस समय अच्छे से देख रही थी।"
"पूंछ तुम बताओ, तुम उस समय क्या कर रही थी?"
"जब आप दौड़ रहे थे तो मैं आपके रास्ते में आ रही थी।"

अच्छा अब मेरे को पता चल गया कि आप ही मेरे रास्ते में रुकावट डाल रही थी। क्या तुम रुकावट डालती रही हो ने? देखते रहना इस के बदले में मैं आप से क्या क्या करुगी। और इस के पश्चात् उसने धक्का देकर अपनी पूंछ को घुरने से बाहर फेक दिया।"कुत्ते आप यही हो न, ले मेरी शरारती पूंछ खा ले।"
कुत्ते ने बहन लोमड़ी को बाहर पड़ी झाडीनुमा पूंछ से पकड़ा और घुरने से बाहर निकाल लिया। उसने बहन लोमड़ी को जोर जोर से धक्के मारे।